भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करनेवाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष–17, अंक–11 सोमवार, 26.11. 94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी नवम्बर, 1994	वार्षिक चन्दा–50.00 प्रति अंक : 5.00

तू आत्मीय बन, तू आत्मीय बन.....
हरिस्वामी कराएं यहि रटन..... आया आत्मीय महोत्सव !

1993 के दिसं. में पू. काकाजी का अमृत महोत्सव बम्बई में मना कर इसी साल फरवरी में हमने दिल्ली मंदिर में भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों की प्रतिष्ठा करके प.पू. काकाजी का अमृत पर्व खूब धूमधाम से मनाया..... अब साल के अंतिम महिने के अंतिम दिनों में व नये साल की शुरूआत में प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का आत्मीय महोत्सव यानि 60वीं जंयती सोखडा-गुजरात में खूब धूमधाम से मना कर दर्शन सेवा समागम का अमूल्य सौभाग्य हम सभी को मिलेगा। साक्षात् स्वरूपों ऐसे महोत्सवों का निमित्त रखकर नई-नई स्मृतियाँ देकर अखंड आनंद उल्लास व उमंग में रखने की इच्छा रखते हैं।

धन्य हो महाराज को! धन्य हो गुरु गुणातीत को! कैसी दया करके सब के आदर्शरूप गुणातीत संत प्रणालिका रखकर सत्युग के सूर्य का शाश्वत् प्रकाश पृथ्वी पर अखंडित रखा..... जैसे जौहरी हीरे को पहचान लेता है वैसे ही गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपनी पारदर्शक दृष्टि से प.पू. स्वामिजी का ब्राह्मी नूर देखकर उन्हें अपनी सेवा में ले लिया। एक बार पू. स्वामिजी जब बापा के साथ युवक के रूप में सेवा में थे, तब उनके साथ गाड़ी में अमदाबाद से राजकोट जा रहे थे। बापा ने स्वामिजी को कहा-गुरु! जोर-जोर से स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भजन करो। स्वामिजी ने लगभग आधा घंटा इस प्रकार भजन किया। बाद में बापा बोले-तुम्हारी आवाज रास्ते जाते-जाते-अनजाने में जिस व्यक्ति, पशु, पक्षी के कान में पड़ी होगी उन सब का आत्यंतिक कल्याण हो जायेगा। एक ओर इस प्रसंग से स्वामिनारायण महामंत्र की अपरम्पार महिमा का दर्शन होता है, तो दूसरी ओर भविष्य में प.पू. स्वामिजी द्वारा होने वाले अदभुत कार्य का सांकेतिक इशारा था। आज स्वामिजी की परावाणी से लाखों लोगों का कल्याण हो रहा है..... गुरुहरि योगीजी महाराज को धन्यवाद जो प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के रूप में गुणातीत संत हमें दिये।

सारंगपुर में योगी बापा की जंयती का उत्सव था। मंदिर को तोरन से सजाने की सेवा चल रही थी। पू.स्वामिजी व पू.महंतस्वामिजी युवक के रूप में

ध्वजा-पताका बनाने की सेवा कर रहे थे। दोपहर को लगभग दो बजे का समय था। अचानक ही योगी बापा आराम में से किसी की भी मदद लिए बिना अकेले ही चलकर वहाँ पहुँचे और बोले गुरु हमें भजन करते-करते सेवा करनी ऐसी आदत डाल देनी।

पू.स्वामिजी की हम से कोई अनोखी प्रीति है सो यह प्रसंग बताते हुए पू.स्वामिजी बोले कि बापा ने जब से ऐसा सूचन किया, उस दिन से भजन करते-करते ही सारी सेवा करने की ऐसी आदत डाल दी कि बापा को दोबारा मुझे इस बारे सूचन करना पड़े ऐसी क्षण नहीं आने दी। स्वामिजी का बापा के साथ कैसा संबंध। कैसी गुरुभक्ति। कैसी सजागता व करूणा कि बड़े पुरूष स्वयं जीकर बताते हैं कि हमें गुणातीत पुरूषों की ओर कैसी निगाह रखनी चाहिए जो रखने से वे अपना सर्वस्व सेवक को देते हैं। गुरुहरि योगीजी महाराज के वचनों के प्रति ऐसी अद्‌भुत सजागता रखकर स्वामिजी महाराज के पनौते पुत्र- वारिसदार बन गए।

प.पू. स्वामिजी के जीवन के प्रत्येक हलन-चलन से आज सब श्रेयार्थी साधकों के चैतन्य का विकास हो रहा है। सभी को लौकिक, अलौकिक, आध्यात्मिक सूझ-समाधान प्रेरणा-बल उनसे मिलता है। देश-विदेश की धरती पर आज प.पू. स्वामिजी के अनहद् परिश्रम से संतों, बहनों, युवकों अंबरीषों के एक विशाल आत्मीय समाज का दर्शन हो रहा है। देश के भविष्य के किशोरों, हजारों नवयुवकों को अपने प्रेम में बांध कर कई बुरी आदतों व्यसनों से मुक्त कराकर जीवन की दिशा ही बदल दी है। आपसी कलह को मिटाकर पू स्वामिजी की प्रसन्नता पाने पू. स्वामिजी को ही आगे रखकर कई परिवार मिलजुल कर रहे हैं। पू. स्वामिजी के जीवन की पल-पल का आज विचार करें तो भी बिना काई साधन करें हम आत्मीय बन जाएंगें। हरिभक्तों के सामाजिक, आर्थिक, मानसिक दुःख को पलमात्र भी सहन न कर सकने वाले स्वामिजी ने चंदन की भांति खुद की देह को हरिभक्तों को सुखी करने घिस दिया है। भगवान स्वामिनारायण के अल्प संबध वाले मुक्तों के लिए जीवन की प्रत्येक क्षण मेरी देह काम में नहीं आये तो शास्त्रीजी महाराज योगीजी महाराज, मुझे माफ नहीं करेंगे। स्वामिजी की परावाणी के इन शब्दों में कैसी अप्रतिम महिमा, गुरुभक्ति और पराभक्ति समायी है।

पू.स्वामिजी ने 1993 दिसम्बर महीने में ब्लडप्रैशर की बिमारी ग्रहण करी थी। B.P. कभी खूब high और कभी खूब low जो अत्यधिक चिन्ता का विषय था। उसके बाद तुरन्त ही पू. स्वामिजी ने बम्बई में पंचकर्म कराया। पू. स्वामिजी पंचकर्म कराकर हरिधाम पधारे, वहाँ भरूच के विद्वान प्राध्यापक श्री अश्विनभाई कापड़िया पू. स्वामिजी के दर्शन करने पधारे। पू. अश्विनभाई ने बातचीत के दौरान पू. स्वामिजी को विनम्रभाव से प्रश्न पूछा कि स्वामिजी ! आप तो हजारों-लाखों हरिभक्तों के तन रोग मिटा सकते हो, अरे ! सिर्फ शरीर के रोग ठीक करने की बात तो ठीक, आप तो मन के धन के व आत्मा के रोग तक भी मिटा सको वैसे समर्थ हो तो फिर आपको पंचकर्म का treatment किसलिए करना पड़ा? पू. स्वामिजी ने भक्तों के प्रति का अनन्य वात्सय व करूणा, अनोखी अप्रतिम आत्मीयता, ममता के दर्शन कराते हुए कहा कि आत्मीयता की top कक्षा पर सबको पहुँचा कर बापा के चरणों में एक आत्मीय समाज रखना है। इसलिए भक्तों में रहा हठ, मान व ईर्ष्यारूपी कचरा निकालने पंचकर्म कराना पड़ा !

स्वामिजी द्वारा दिए उत्तर का विचार करे ंतो ख्याल आयेगा कि हमारे जैसे अनेक भक्तों के आंतरिक तंत्र की कमियों की पूर्णाहूति हो और हम अखंड सुखी हों उसके लिए पू. स्वामिजी का कैसा परिश्रम ! स्वयं के देह पर दर्द और व्याधि ग्रहण करके भी उन्हें तो एक ही गरज है कि तुम सब आत्मीय बनो। यह भक्तों के प्रति की कैसी अनोखी अपनेपन की भावना होगी ? इस प्रकार अपनी देह पर स्वयं कष्ट लेकर भक्तों की आत्मा के शद्धिकरण व उत्थान के लिए विपुल पुण्य का खजाना उदारता से बांटकर भक्तों के प्रति की आत्मीयता का दर्शन पू. स्वामिजी करा रहे हों ऐसा लगता है। हम सब भक्तों के जीवन में रहें आंतरिक दोष-निर्मूल हों और सहजानंदरूपी

सौम्यमूर्ति हमारे हृदयाकाश में विराजमान हो उसके लिए पू. स्वामिजी की हर एक चैतन्य के साथ कैसी अनिवर्चनीय आत्मीयता.....

ऐसे गुणातीत स्वरूपों का हमें दुर्लभ योग कहां से? हमें स्वरूपों अपना जानें वह हमारा कैसा बड़ा भाग्य ! हमारे जीवनकाल में ऐसा आत्मीय महोत्सव मनाने का दुर्लभ सौभाग्य कहां से ? बस ऐसे विचारों में रहकर हमें आनंद में रहना है। पर जब तक मन-बुद्धि के मूल्याकनों से जीयेंगे, तब तक ऐसी महिमा व प्राप्ति की मस्ती हमारे हृदय में स्थिर नहीं हो पायेगी।

इसलिए मन-बुद्धि को गिने बिना वर्तेंगे तो ही सच्चे अर्थ में आत्मीय बन सकेंगे.....प्रभु से बुद्धि योग मिलेगा और सरलता भी प्रगटेगी। अपनी समझदारी का- ज्ञान का मान, हर ठहराव छोड़कर प्रभु की योजना में जुड़ जाएं..... हमारे अहम् के विसर्जन के लिए हमारे गुण, ज्ञान की विशिष्ट छोड़कर अपने दोष का दर्शन करके, सामने वाले का गुण लें! अपने - अपने मन स्वभाव का दायरा छोड़कर हम आपस में स्नेह व आत्मीयता से एक दूसरे के करीब आए.... एक-दूसरे की महिमा समझ पाये ! एक दूसरे के गुणों का दर्शन कर सकें.....प्रभु का कर्ताहर्तापन, प्रभु की सत्ता का स्वीकार करके श्रद्धा व विश्वास से दृढ़ निष्ठा पकड़ रखें यही एकमात्र ऐसे महोत्सव कराने के पीछे गुणातीत स्वरूप की चाहना है..... उनके इस अभिप्राय की भक्ति को समझकर चलने लग पड़े.... वही सच्चा आत्मीय महोत्सव मनाया कहा जायेगा।

इससे भी अधिक पू. स्वामिजी ने स्वयं ही कृपा करके आत्मीय महोत्सव के निशानरूप अपना अभिप्राय इस नूतन वर्ष संदेश में बताया है-

गुरुहरि योगीजी महाराज के सनातन सूत्रों

1. संप, सुहृद्भाव और एकता रखनी।
2. सेवा, पवित्र साधकों का- भक्तों का जीवन होना ही चाहिए।
3. युवकों मेरा हृदय है।

इन तीन सूत्रों को आत्मसात करने और व्यापक बनाने-गुरुभक्ति अदा करने के लिए आत्मीय महोत्सव का आयोजन किया है। इसलिए इस सेवा के लिए सब जाग्रत रहना। महाराज और स्वामी व गुरुहरि योगीजी महाराज सब को खूब-खूब बलबुद्धि दें और हृदय में आत्मीयता का आनंद प्रगटायें.....यह प्रार्थना !

ऐसे उत्सवों द्वारा ही गुणातीत स्वरूपों हमारा देहभाव पिघालने, हम में महिमा भरने, साधना मार्ग की कोई अनोखी सूझ देने, परस्पर नजदीक आने की प्रार्थना करने का सुवर्ण मौका देते हैं.....तो आईये, हम सब आत्मीय महोत्सव के मंगलकारी अवसर पर गुणातीत स्वरूपों के चरणों में अतंर से प्रार्थना करें.....

हे महाराज ! हे स्वामि ! हे गुणातीत स्वरूपों....आप हमारे लिए दिन-रात अविरत परिश्रम कर रहे हैं और जल्दी से जल्दी हम आदर्श गुणातीत सेवक बने यही आपको उमंग है। तो सब बाहरी व भीतरी जगत दोनों से ऊपर उठें यानि हमारी मान्यताएँ, राग,गुण अंग, शक्ति, बुद्धि या समझदारी किसी जगह पर बंधे नहीं जाये, हमें केवल पल-पल आपकी मूर्ति में ही बंधना है। आपको क्या जँचता है और क्या नहीं जँचता.....वह हर एक छोटे बड़े प्रसंगो पर जीवन के सर्व क्रियायोगों में जांच करने का बुद्धियोग आप ही कृपा करके देना।

कोई सुहृदभाव से वर्ते या न वर्ते पर मैं सुहृदभाव कभी भी नहीं छोडूं और सभी प्रकार की अपेक्षा और उपेक्षा से पर होकर सब के साथ- सामने से ही रसबस होने का प्रयत्न करूं, ऐसी मेरी सुरुचि में दिन-प्रतिदिन वृद्धि ही होती रहे- ऐसा आप अनुग्रह करना। स्वप्न में भी एक-दूसरे के लिए भावफेर या आपको झुकाने का विचार मात्र कभी न आये। आपकी प्रेरणा से प्रभुप्रेरित जीवन जीते हो जाएं उसके लिए बल देना।

सच्चे अर्थ में गुणातीत सेवक व सही अर्थ में साधु बनने हमारे स्व को आपके चरणों में समर्पित करके, अपना देहभाव पिघला कर सच्ची सरलता से प्रभुप्राप्ति के रास्ते पर दौड़े। आप हम पर बेहिचक शासन कर सको ऐसा गरजु गरीब, गुलाम व सर्वदेशीय सेवक हम जल्दी से जल्दी बन कर आपको निश्चिंतता दे- यह हमारी भावनाएँ साकार कर देना- यही आत्मीय महोत्सव पर अंतर की अभीप्सा !

यही साधु हरिप्रसाद के
जय स्वामिनारायण !

अनिर्देश की गतिविधियाँ.....

✷ हर बार की तरह दीपावली निमित धनतेरस से पू. गुरूजी हरिभक्तों के घर पघरामनियाँ करने गए और दो-तीन भक्तो के घर पर बताया कि हमारा सच्चा धन यह भव्य संबंध जो हुआ है वह है-उसे संभालना है..... उसे बढ़ाना है। 3 नवम्बर' 94 दीवाली की शाम को अनिर्देश मंदिर में पहली बार शारदा पूजन का आयोजन किया गया। सभी व्यापारी हरिभक्तों ने नए साल की शुरूआत करने हेतु अपने व्यापार की बही रखवाई। प.भ. कौशिकभाई जानी के पिताजी ने शास्त्रोक्त विधि से शारदा पूजन करवाया। पू. गुरूजी व पू. भाईस्वामीजी के सान्निध्य में उन किताबों का पूजन किया गया। मंत्रोच्चारण के दिव्य वातावरण की सुवास सब ने महसूस की। इस पूजन निमित्त पू. गुरूजी ने आशीर्वाद दिए कि नारायण रखेंगे तो लक्ष्मीजी आएगी ही..... सभी की लक्ष्मी शुद्ध होवे-व्यावहारिक व आध्यात्मिक प्रगति हो।

✷ 4 नवम्बर '94, यानि नया साल..... भगवान के सम्मुख अन्नकूट धराने का दिन..... अनिर्देश मंदिर में मूर्तियों की स्थापना के बाद पहली बार अन्नकूट लगाया गया। सबसे पहले संतों के सान्निध्य में सत्संग सभा हुई। पू. गुरूजी ने प.पू. काकाजी द्वारा बनाया एक भजन सुनवाया 'तू है बड़ो मदारी, तू है जादूगर.....' और इसका निरूपण करते हुए नए वर्ष के लिए दो सूत्र दिए-

1. Don't follow me, I am already possessed by Supreme' यूं अपने मन को कहना है ताकि वह हम पर हावी न हो।
2. सत्संगी का सत्संगी बनना-यानि प्रगट स्वरूप के आगे पीछे घूमने के बजाय प्रगट स्वरूप के भक्तों में रसबस होने से प्रभु राजी होते हैं।

सभा के बाद मूर्तियों के समक्ष आरती करने के लिए सभी इकट्ठे हुए। पूरे वर्ष में जो भोजन हम करते हैं उन सभी का भोग लगाने सभी हरिभक्तों द्वारा मिलजुल कर बनाये व्यंजनों को कलात्मक रूप में सजाया था। कुल मिलाकर करीब 350-400 व्यंजनों का भोग ठाकुरजी को लगाया। महाराज व गुणातीत स्वरूपों भक्तों की भावना ग्रहण करते हुए बहुत सुन्दर-लुभावना दर्शन दे रहे थे। अन्नकूट आरती करने के पश्चात् सभी हरिभक्तों को ठाकुरजी द्वारा लगाया भोग का प्रसाद दिया गया। लगभग1500 हरिभक्तों ने उस दिन प्रसाद लेकर परम धन्यता का आनंद अनुभव किया।

✷ पू. गुरूजी द्वारा हरिभक्तों को लाड़ लड़ाने कहो या विशेष कृपा कही जाए कि एक महीने के बाद ही पू. गुरूजी फिर से करीब 200 हरिभक्तों को लेकर 11 नवम्बर से 13 नवम्बर तक प.भ. मल्कानी साहब के 'स्वामिनारायण फार्म' पर शिविर करने के लिए ले गए। चूंकि यह शिविर ठंड के मौसम की शुरूआत में आयोजित किया गया इसलिए इसका नाम 'शिशिर शिविर' रखा गया। 11 नवम्बर 94 की रात को 8.30 बजे तक सभी हरिभक्तों फार्म पर पहुँच गए। वहां पहुँच कर सबसे पहले सभी पू. गुरूजी के साथ फार्म की फेरी के लिए निकले। सभी को एक विशेष स्मृति देने पू. गुरूजी ने इस बार मशाल फेरी करवाई। प.भ. भाम्बरी साहब ने दो मशाल बनाई थी- एक भाईयों के लिए और एक बहनों के लिए ! सभी ने एक दूसरे को वह मशाल देते हुए स्वामिनारायण मंत्र के नाम की धून करते-2 फार्म की फेरी लगाई। फेरी के बाद सभी ने प्रसाद लिया और आनंद से सो गए।

इस बार पू. गुरूजी ने फार्म के एक हिस्से में जहाँ पर हरिभक्तों अधिकतर बैठते-घूमते थे वहाँ प.पू. काकाजी द्वारा कहे गए सूत्रों के बोर्ड लगवाए थे। इन सूत्रों द्वारा पू. गुरूजी का हेतु यही था कि इनके द्वारा जो कोई उन सूत्रों को पकड़कर चल पड़े तो वह सुखी हो जाए।

12 नवम्बर की सुबह 7.30 बजे मंगल आरती के बाद सभी प्रभात की मशाल फेरी के लिए गए। फेरी के बाद सभी नाशता करके 9.30 बजे सभा के लिए काकाजी महाराज प्रार्थना भवन में एकत्रित हुए। इस शिविर का उद्घाटन प.भ. हिम्मतभाई ठक्कर द्वारा ज्योति प्रज्जवलित करके हुआ। सभा की शुरूआत में पहले पू. वच्छराजभाई, पू. ऋषिभाई, पू. दिलीपभाई वगैरे ने अपने अनुभव बताये। सभा के बीच में सहज ही मशाल फेरी का माहात्म्य समझाते हुए पू. गुरूजी ने बात करी कि-प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई जैसे चैतन्य स्वरूपों के संबंध से फार्म हाऊस की यह भूमि की रज-रज चैतन्यमयी है। इनकी मूतियों की स्मृतियाँ करके चलना। फेरी का पुण्य छोड़ना नहीं। ऐसे भव्य संबंध के कारण ही तो -इस मशाल फेरी में जो फिरेगा जगत की झंझटों के फेरे यूं ही कट जायेंगे।

सभा में पू. गुरूजी ने वच. ग.म. 28 जीवन-डोरी दयालु प्रकृति का निरूपण करा और इस वचनामृत का माहात्म्य समझाया कि-जिसको सत्संग में जीना है उसका यह

वचनामृत है। अपनी जीवन डोरी सत्संग में कट नहीं जाए। कैसे बची रहे-वह ख्याल रखना। आंख, नाक, कान यदि चला जाए तो जी सकते हैं पर हृदय बंद हो जाए तो नहीं जी सकते। खूब अगत्य का वचनामृत है-सार का सार वचनामृत ! वचनामृत समझाते हुए बात करी–'किसी की बात काटनी नहीं, पर उसे प्यार से सूचना करें-यह विवेक सीखना। किसी की बात तुरन्त तोड़ नहीं देनी।'

साथ में कारियाणी 7 वचनामृत समझाते हुए बताया-हमें भगवान का दिव्य instrument बनना है। हमारी बात सुनने से किसी का जीवन बदल जाए। हमारे बात करने से किसी का जगत निकल जाए..... कोई हमसे प्रीति करे तो उसे और सब का प्यार फीका लगे- ऐसे कल्याणकारी गुण पाने हैं। साधु के रास्ते चलना शूरवीरों का काम है..... कायरों का नहीं। सभा खत्म होने के बाद सभी ने प्रसाद लिया। फिर शाम को पू. गुरूजी के सान्निधय में भाईयों ने कुछ games खेले।

12 नवम्बर की शाम को सभी ने आरती करने के बाद मशाल फेरी करी और प्रार्थना भवन में सभा के लिए एकत्रित हुए। पू. राकेशभाई, पू. प्रभाकरभाई इत्यादि हरिभक्तों ने प्रार्थना स्वरूप अनुभव बताए। इस सभा में जीवन डोरी के वचनामृत की बात आगे करते हुए पू. गुरूजी ने कहा-हम इतनी-इतनी सेवा -भक्ति करते हैं फिर भी भक्ति में बरकत नहीं आती है उसकी वजह है कि हम अपने गुण की consciousness के कारण भक्तों की उपेक्षा करते हैं..... भक्तों को लल्लू समझते हैं। उनकी महिमा नहीं समझते। जब तक भक्तों के दास नहीं बनेंगे, उनकी झंझट नहीं छोडेंगे तब तक सुखी नहीं होंगे। सभी चैतन्य प्रगति करते हुए हैं। सारा controlling प्रभु का है।

वच. ग.म. 26 का उदाहरण देते हुए पू. गुरूजी बोले-राधिकाजी जैसा बड़ा हो..... वह भले ही अपने में गुण माने कि कृष्ण तो मेरे पीछे घूमता है, पर भगवान चलने नहीं देंगे। इसलिए इस रास्ते तो चलना ही नही। वच. अत्यं प्र. 8 समझाते हुए बताया-प्रसंग कोई भी बने, पर हमें trust हो जाता है- चुभ जाता है तो पक्का समझना कि अन्दर कील है ही जिस पर तौलिया अटक गया। मतलब वह भीतर में चुभ गया। ego है तो रोना आता है, उदास हो जाते हैं, excite हो जाते हैं..... महाराज छोड़ने वाले तो हैं ही नहीं। अगर भक्तों के दास बनेंगे तो स्वभाव, वासना, प्रकृति कहाँ टल जायेंगे पता भी नहीं चलेगा-लग पड़ेंगे तो खूब कम समय में पूर्णाहुति हो जायेगी।

वच. ग. अत्यं. 25 समझाते हुए बोले-कल्याणकारी गुण, बरकत आदी सब कुछ भक्तों की सेवा महिमा से आयेगा। जो भक्त का भक्त होगा उसकी ही भक्ति कामयाब होगी। संबंध वाले मुक्तों के दास बनेगें तो पू. पप्पाजी पू. स्वामिजी हमारे पीछे-पीछे घूमेगें। इस दिन प.भ. अजय एवं सौ. सुष्मा भाभी की शादी सालगिरह होने के कारण रात को काकाजी महाराज प्रार्थना भवन पर दीपकों द्वारा दीपमाला करी और बहनों ने गरबे करके आनंदोत्सव मनाया।

13 की सुबह मंगल आरती करने के बाद प्रभात मशाल फेरी करके सभी नाशता करके प्रार्थना भवन में सभा के लिए इकट्ठे हुए। बहुत अच्छे दिन सभा का आयोजन था-प्रबोधिनी-एकादशी यानि जिस दिन देव उठते हैं। अहमदावाद से आए पू. उदयभाई इत्यादि ने अपने अनुभव बताए। फिर पू. गुरूजी ने बातें करी जिसमें पू. गुरूजी ने इस शिविर की फलश्रुति बताते हुए कहा-हम एक inch चलेंगे तो प्रभु कई किलोमीटर चलकर आएगें। बस हमें निम्नचार बातें पकड़कर रखनी हैं।

1. प्रभु के असितत्व का-सत्ता का सवीकार
2. ओहो ! मानवस्वरूप में वे प्रभु मुझे मिले!
3. वे मेरे हैं सो मेरे हितकारी ही हैं।
4. सर्वोपरि कर्ताहर्ता मुझे मिले वे प्रभु हैं, उनसे पर कोई सत्ता नहीं सो मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

फिर पू. गुरुजी ने आशीर्वादरूप प्रार्थना करी-पू. काकाजी आज तक का अंधेरा निकाल कर नई रोशनी, नई सूझ दीवाली के दिनों से नई शुरुआत करवा दें। सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया। शाम को भाईयों ने games इत्यादि खेले। शाम की आरती के बाद 'भजन संध्या' का कार्यक्रम रखा गया। इस सभा में जो हरिभक्तों भाईयों या बहनें games इत्यादि जीते थे उन्हें पू. भाईस्वामिजी व पू. आनंदी दीदी ने स्मृतिरूप पुरस्कार दिए। अंत में प.भ. मल्कानी साहब ने पू.गुरुजी व सभी हरिभक्तों को शिविर करने आने के लिए धन्यवाद दिया और पू. गुरुजी से प्रार्थना करी अब की बार आपका प्रागट्य दिन व अगले वर्ष गर्मियाँ शुरू होने से पहले शिविर का आयोजन किया जाए। सभा समाप्त होने के बाद सभी मशाल फेरी के लिए गए। मशाल फेरी करके सभी ने प्रसाद लिया और अनिर्देश व अपने घरों के लिए हरिभक्तों यूं आत्मा की बैटरी चार्ज करके रवाना हुए।

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

स्वामी की बातें

392. आत्मज्ञान से केवल्यार्थी हुआ हो, तो भी विचलित हो सकता है। लेकिन जिसे यूं हो कि मैं प्रगट भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं- ऐसी दृढ़ता जिसे हुई हो उसे किसी से डर नहीं रहता। काल, कर्म, माया, देवऋण, पितृऋण, मनुष्यऋण सभी से छुटकर भगवान को वह पा गया है। इस लोक का सुख-दुःख मिथ्या है और व्यवहार हैं उसमें सुख-दुःख तो आए लेकिन जिस दिन रोटी न मिले उस दिन हमें पूछना। जिसे रोटी की दिक्कत ना होने देनी हो वह दसवां-बीसवां भाग सेवा का निकाले।

प्र-5,168

363. दो साल बिना बारिश दाने पूरे किये हैं और बरसात के आसार तो नहीं लगते, पर सत्संगी के लिए बरसाते हैं।

प्र-5,169

394. इन सभी ने भगवान भजने जन्म लिया है और सब पुराने हैं लेकिन नए नहीं है। सो ही यहां आ पाये हैं। भगवान व साधु में वृत्ति नहीं जुड़ पाती, पर स्त्री में खींची जाती है वह तो भगवान की माया का बल है और कुछ नहीं।

प्र-5,170

365. मैं कुटुम्ब का नहीं, लोक का नहीं, देह का नहीं, मैं तो भगवान का हूँ- यूं मानना और इस समागम के बिना तो और कहीं जा बैठेंगे परन्तु महाराज के पास नहीं जा पायेंगे।

प्र-5,171

396. भजन करते-करते नींद आ जाए व इन्द्रियाँ विराम को पा जाए और जब जगें तब भजन होए- यूं ख्याल पड़ता है।

प्र-5,172

397. लाखों-करोड़ चींटीयों का झुण्ड निकला हो तो उसमें छोटी-बड़ी पता नहीं चलती। ऐसे ही माहात्म्य से जब दृष्टि विशाल होती है तब अच्छा-बुरा विषय निगाह में नहीं आता और देह धारण करी है, सो भोगेगा तो सही।

प्र-5,173

398. सत्य, हितकारी और प्रिय वचन बोलना और सहज ही कहना पर, जबरदस्ती कुछ कहना नहीं।

प्र-5,174

399. महाराज यूं बैठते थे। आठों धाम देखे, लेकिन ऐसे साधु कहीं नहीं और उनके दर्शन को तो भगवान भी चाहते हैं और इस साधु में तो भगवान रहे हैं।

प्र-5,175

व्रतोत्सवसूची

1-	दि. 13-12-94	मंगलवार	मोक्षदा एकादशी व्रत
2-	दि. 15-12-94	गुरुवार	धनुर्मास प्रारंभ
3-	दि. 26-12-94	गुरुवार	एकादशी,व्रत सर्व गुणातीत स्वरुपों की सेरे छाया में प्र. ब्र. स्व. प. पू. हरिप्रसाद स्वामीजी का आत्मीय महोत्सव सोखड़ा में मनायेगें।
4-	दि. 30-12-94	शुक्रवार	,,
5-	दि. 31-12-94	शनिवार	,,
6-	दि. 01-01-95	रविवार	,,

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
A-103, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, Mouth Maujpur, Delhi Tel.: 2262473